सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का परमपावन जन्म – विशिष्टता व प्रमुखता

रबीअ उल अव्वल वह पावन व महान महीना है जिस में हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म हुआ। अल्लाह तआ़ला आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) के पावन जन्म को प्रधान्य प्रतिभा प्रदान की। आप की प्रतिभा व उत्तमता, प्रतिष्ठा व बुलंदी के प्रकटन के लिए अल्लाह तआ़ला ने इस अवसर पर बेपनाह रहमतों का प्रकटीकरण किया। खुशियों तथा आनन्द का ऐसा प्रबन्ध किया के पावन जन्म के वर्ष को सफलता व विजय का वर्ष कहा जाने लगा।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म धन्य मक्का में हुआ। मक्का नगर में आप की आगमन के कारण अल्लाह तआ़ला क़ुरान करीम में इस नगर का वचन वर्णन किया, तथा अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- मुझे इस नगर मक्के का वचन, इस लिए के अए महबूब आप इस नगर में रहते हैं।

(सुरह अल बलदः 90-1-2)

अब ये विचार उत्पन्न हो सकता है के अल्लाह तआ़ला ने मक्के शहर का वचन इस लिए वर्णन किया के वह रूहानी व आत्मिक का विशाल केन्द्र है।

ऐसा गौरवान्वित नगर है के जहाँ अल्लाह तआ़ला की प्रकृति के विशाल निशानियां उपलब्ध है।

इस नगर में कअ़बातुल्लाह शरीफ तथा हज्रे-असवद है। निश्चय ये सारी प्रतिभा मक्के को प्राप्त हैं, किन्तु अल्लाह तआ़ला ने इन विशिष्टा व गौरव के कारण मक्के की कसम वर्णन नहीं की, बल्कि जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म हुआ तथा आप ने मक्के को अपनी निवास स्थान बनाया तो अल्लाह तआ़ला ने अपने पवित्र कलाम में इस हैसियत से पवित्र नगर का वचन वर्णन किया, अर्थात अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- मुझे इस नगर मक्के का वचन, इस लिए के अए महबूब आप इस नगर में रहते हैं।

(सुरह अल बलदः 90-1-2)

मक्के ने चूमे कफ पा इस की उत्तमता बढ़ गई

इस प्रतिष्ठता की गवाही क़ुरान की आयत है

(लेखक)

जिस माननीय नबी व पैगम्बर का पावन जन्म तथा आगमन के कारण से अल्लाह तआ़ला ने मक्के नगर का वचन वर्णन किया है, इन का धन्य जन्म की विशेषता व गौरव के वर्णन से अपनी आत्मा को जाला प्रदान करें तथा इ़मान को नवीनता व शीतलता दें।

नूरे-मुसतफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की उत्पत्ति

जामेअ़ तिरमिज़ी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सयैदना अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णित करते हैं के सहाबा किराम ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की धन्य सेवा में निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम आप के लिए नबूवत कब अनिवार्य व वाजिब हुई? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः (मैं उस समय भी नबी था) जब के आदम अलैहिस सलाम आत्मा तथा शरीर के बीच थे।

(जामेअ़ तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 3968)

युं तो आप सम्पूर्ण पैगम्बरों में सब से अंत में आए किन्तु आप के नूर मुबारक की उत्पत्ति व रचना सार कायनात से पूर्व हो चुकी थी जैसा के सरकार पाक का आदेश हैः-

भाषांतरः- सब से प्रथम जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने पैदा की वह मेरा (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) नूर है।

हज़रत शाह अबदुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने इस हदीस पाक को सहीह हदीस घोषित देते हुए कहाः अर्थात ये हदीस सहीह है।

(मदारिज अल नबूवह, जिल्द 02, पः 02)

मुसन्नफ अबदुर रज़्ज़ाख, मवाहिब लदुन्निया तथा सीरत हलबिय्या में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना जाबर बिन अबदुल्लाह अनसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के मैं ने हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की धन्य सेवा में निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! मेरे माता-पिता आप पर क़ुर्बान! मुझे बतलाएं के अल्लाह तआ़ला ने सम्पूर्ण वस्तु से पूर्व किस चीज़

को पैदा किया? तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने आदेश फरमायाः अए जाबेर! निश्चय अल्लाह तआ़ला ने सम्पूर्ण कायनात से पूर्व तुम्हारे नबी के नूर को अपने नूर से पैदा किया, फिर वह नूर अल्लाह तआ़ला की प्रकृति से जहाँ चाहता था सैर करता रहा। इस समय लूह थी ना क़लम, जन्नत ना दोज़ख, आकाश ना धरती, चांद ना सूर्य तथा ना जिन्न ना मनुष्य।

(अल मवाहिब अल लदुन्निया मअ़ हाशियह ज़ुरखानी, जिल्द 01, पः 89 / अल सीरह अल हुलैबियह, जिल्द 01, पः 31)

धन्य नूर

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के मुबारक नूर को अल्लाह तआ़ला ने सर्व प्रथम पैदा किया तथा इस मुबारक नूर पर तरह-तरह के आभूषण करता रहा। जब वह धन्य नूर हज़रत आदम अलैहिस सलाम की पवित्र पेशानी में रहा तो आप को मसजूद मलाइ़का बना दिया।

इस प्रकार ये नूर हज़रत नूह अलैहिस सलाम, हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम व हज़रत इसमाईल अलैहिस सलाम में से हो कर सब को संबोधित करता रहा। इमाम फ़क्र उद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने तफसीर कबीर में लिखा हैः-

भाषांतरः- वास्तव ये है के हज़रत आदम अलैहिस सलाम को सजदा करने का, फरिश्तों को इस लिए आदेश दिया गया था क्यों के हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का धन्य नूर हज़रत आदम अलैहिस सलाम की पावन पेशानी में था.

(अल तफसीर अल कबीर, सुरह बक़रह, 02:253)

वह धन्य नूर पुश्तों तथा पवित्र रूहों के द्वारा बनू हाशिम में हज़रत अबदुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दीप्तिमान पेशानी पर चमका।

इस पावन नूर के आशीर्वाद कि ये स्थिति थी के अकाल के वर्ष के समय लोग इस से आशीर्वाद प्राप्त किया करते। अर्थात मवाहिब लदुन्निया में रिवायत हैः-

भाषांतरः- खुरैश जब कठिन अकाल के वर्ष में फंस जाते तो हज़रत अबदुल मुत्तलिब का हाथ पकड़ कर सबीर पर्वत की ओर ले जाते तथा आप के वसीले से अल्लाह तआ़ला के दरबार में विनती व प्रार्थना करते, तथा रहमत की वर्षा के प्रकट होने के लिए दुआ़ करते तो अल्लाह तआ़ला सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य नूर की बरकत से इन पर रहमत की वर्षा प्रकट करता तथा इन्हें सम्पूर्ण रूप से सैराब कर देता।

(अल मवाहिब लदुन्निया, हाशियह अल ज़ुरखानी, जिल्द 01, पः 155)

पवित्र नूर का हज़रत अबदुल्लाह में परिवर्तन

फिर वह पावन नूर हज़रत अबदुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में रूपांतरण हुआ जो कोई यहूदी मक्के में आता हज़रत अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चेहरे में पवित्र नूर देख कर कह उठता लोगो! नूर अबदुल्लाह का नहीं, मुहम्मद बिन अबदुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का नूर है।

जब वह किसी सूखे वृक्ष के नीचे बैठते तो वृक्ष हरा-भरा हो कर इन पर ड़ालियां झुका देता जब सूखी धरती पर ठहरते तो धरती पर घास उग आती।

पावन नूर हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा में

24 वर्ष की उ़म्र में हज़रत अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विवाह हज़रत आमिना बिन्त वहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से हुआ। रज्जब के महीना, सोमवार की रात हज़रत आमिना बिन्त वहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा नूर मुबारक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की अमानतदार हुईं।

हज़रत आमिना में पावन नूर के आगमन पर ख़ुशियों का प्रबन्ध

मवाहिब लदुन्निया में खतीब बग़दादी के हवाले से आख्यान हैः-

भाषांतरः- इमाम सहल बिन अबदुल्लाह तुसत्री ने वह रिवायत वर्णन की जिसे खतीब बग़दादी ने रिवायत की हैः जब अल्लाह तआ़ला को स्वीकार हुआ के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन नूर हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के धन्य पेट (गर्भ) में आए, वह रज्जब का महीना था, और सोमवार की रात थी, इस रात अल्लाह तआ़ला ने रिज़वान जन्नत के रक्षक को आदेश दिया के फिरदौस के दर्शकगण के पूर्ण दरवाज़े खोल दें। आकाशों तथा धरती में एक समाचार "सुनो! निश्चय वह प्रकृति के खज़ाने में रखा हुआ नूर जिस से नबी हादी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम आने वाले हैं। आज की रात अपनी आदरणीय माँ सैयिदह आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को गर्भ में रूपांतरण हो चुका है। वह गर्म में समयावधि सम्पूर्ण करने के बाद बशीर (शुभ सूचना देने वाले) और नज़ीर (गम्भीरता की सलाह देने वाले) की प्रतिभा से उजागर होने वाले हैं।
"

(अल मवाहिब अल लदुन्निया, मआ़ हाशियह ज़ुरखानी, जिल्द 01, पः 197)

इस रात को आनन्द व प्रसन्नता का प्रबन्ध था। खसाइ़स कुबरा था मवाहिब लदुन्निया की ये रिवायत इस का विवरम कर रही हैः

भाषांतरः- इमाम अबु नुअ़म ने सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत व्याख्या की है, आप ने फरमाया के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य पेड में तशरीफ लाने की निशानियों में ये था के इस रात खुरैश के सार जानवर बोल उठेः कअ़बे के रब का वचन! आज रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम धन्य पेट में तशरीफ लाए हैं, आप सारे विश्व के इमाम तथा सम्पूर्ण संसार जाति के लिए प्रफुल्ल दीपक हैं। इस रात संसार के सम्पूर्ण राजाओं के तक़त उलट गए, पूरब के जानवर पश्चिम के जानवरों को शुभकामना व अभिनन्दन करने लगे। इसी प्रकार महासागर के प्राणी भी आपस में एक दूसरे को गवाही व बधाई देने लगी, पवित्र गर्भ के बाद हर महीने आकाश तथा धरती में सूचना होती जातीः "बधाई हो! कुशल के केन्द्र व बरकत के मध्य, ह़ज़रत अबुल खासिम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की आगमन का समय आ चुका है"।

(अल मवाहिब अल लदुन्निया मअ़ा हाशियह ज़ुरखानी, जिल्द 01, पः 202-203 / अल क़साइस कुबरा, जिल्द 01, पः 81)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का जन्म

सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आगमन से पूर्व अल्लाह तआ़ला ने किस प्रकार प्रसन्नता व मंगल का प्रबन्ध किया। हर ओर हर्ष का वातावरण है। प्रसन्नता व सुख की वायु छाई हुई है।

सूर्य को अधिक दीप्तिमान कर दिया गया। सितारे व नक्षत्र धरती के निकट आ गए। चारो ओर नूर ही नूर छा गया है। मलाइ़का स्वागत के लिए उपस्थित हैं। ह़ज़रत मरयम व ह़ज़रत आसिया हूरों के साथ सेवा की कृपा के लिए आ चुकी हैं।

उत्कृष्ट व निपुण नूर की आगमन की खुशी में आकाश को दीप्तिमान कर दिया गया। सत्य सुन्दरता की आगमन में धरती को सुशोभित कर दिया गया। पुष्प व फूल महकने लगें, प्रिय व महबूब के आगमन में महासागर की मौजें बुलंद होने लगीं, गर्व से पर्वत की छाती चोड़ी हो गई।

अतः सर्व निर्माण प्रतीक्षारत है इस पावन जात की आगमन व पदार्पण की। जिस के लिए पूर्ण कायनात व्यवस्थित की गई। जिस के सदखे में निर्माण को अस्तित्व दान किया गया।

जगमगा उठा ज़माना आए जब आखा मेरे

ज़ुलमतें सब छुट गईं ये आप की कृपया है

(लेखक)

अब प्रतीक्षा की घड़ियां समाप्त हो चुकी हैं। वह अहमद मुक़तार, रसूलों के ताजदार, बनी आ़ली वखार, ग़रीबों के ग़मस्गार, हबीब किर्दगार की आगमन है। जिन के उजागर के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस सलाम ने प्रार्थना की थी। जिन की आगामी की गवाही हज़रत ईसा अलैहिस सलाम ने दी थी, जिन के उत्तमगुण व विशिष्ठता स्वर्गीय पुस्तकों में वर्णन किए गए।

अर्थात हाथियों की जाति के घटना के 55 दिन बाद मक्के में 12 रबीअ ़ल अव्वल सोमवार के दिन 23 अप्रैल 571, सवेरे के समय सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के सूर्य का उदय हुआ जिस की किरणें ब्रह्माण्ड को हमेशा के लिए रोशन कर दें तथा सर्व संसार में खुशी की वायु छा गया।

12 रबीअ़ उल अव्वल को धन्य जन्म

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म 12 रबीअ़ उल अव्वल सोमवार के दिन हुआ। अर्थात अ़ल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ सालेही रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 942 हिज्री) ने सुबुलुल हुदा वर्रशाद में 12 की रिवायत वर्णन की है तथा लिखा है के मुसन्नफ इब्न अबी शैबह में हज़रत जाबेर व हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से 12 की रिवायत उपलब्ध है।

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 01, पः 334)

अल्लामा ज़ुरखानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1122 हिज्री) ने शरह मवाहिब में लिखा हैः

भाषांतरः- पावन जन्म 12 रबीअ़ उल अव्वल को हुआ तथा प्राचीम काल से और वर्मान काल मक्का वाले का व्यवहार है के रबीअ़ल उल अव्वल की 12 दिनाक को ही प्रिय जन्म स्थान की ज़ियारत करते हैं।

(शरह अल ज़ुरखानी अला अ़ल मवाहिब, जिल्द 01, पः 248)

भाषांतरः- हज़रत जाबेर तथा हज़रत अबदुल्लाह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म सोमवार 12 रबीअ़ल उल अव्वल को हुआ तथा सार्वसम्मति विद्वान के पास यही मशहूर है, वास्तव स्थिति का ज्ञान अल्लाह के पास है।

(सीरह इब्न कसीर, जिल्द 01, पः 199)

पावन जन्म के लिए रबीअ़ उल अव्वल का निर्वचन

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म महीना रबीअ़ उल अव्वल है। आप का धन्य जन्म रबीअ़ के महीने में होने का

कारण ये है के रबीअ़ का अर्थ बहार के हैं। जब वसन्त का मौसम आता है तो मृतक धरती जीवित हो जाती है। निरर्थक पृथ्वी में पिर से हरियाली उग आती है, वृक्ष जो सूख चुके थे वह फिर हरे-भरे तथा तरो-ताज़ा हो जाे हैं।

बाग़ व चमन को अनी खोई हुई कांति फिर से प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकार अल्लाह तअ़ाला रबीअ़ के महीने (वसन्त का मौसम) में सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को भेज कर ये संकतक कर रहा है के जो नबी रहमत सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम तुम में आ रहे हैं वह मृतक दिलों को जीवन प्रदान करने वाले हैं।

जो लोग अत्याचार व विषाद के बोझ तले दबे हुए हैं इन पर रहम व करम करने वाले हैं। लोगों के दिलों को स्नेह व मुहब्बत से उजागर कर के इ़माम में मधुरता प्रदान करने वाले हैं तथा अज्ञानता व उपेक्षा में डूबे हुए दिलों को अल्लाह तअ़ाला की याद से विपुल करने वाले हैं।

पावन जन्म की विशिष्ट प्रतिभा

संसार में बच्चे जन्म लेते हैं तो रोते हुए जन्म लेते हैं किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम सजदह करते हुए, कलिमे तैयिबा पढ़ते हुए सर्व कायनात को संबोधित करते हुए आए। आप का सजदह करना क्या था के अल्लाह तअ़ाला ने सर्व धरती को सजदे का स्थान बना दिया।

सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः और मेरे (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम) लिए सारी धरती पवित्र करने वाली तथा सजदे का स्थान बना दिया गया।

(सहीह मुसलिम, किताबुल मसाजिद, ह्दीस संख्याः 1195)

पूर्व संप्रदाय के लिए ये आदश था के उपासना व इ़बादत करना हो तो विशेष स्थान पर ही इ़बादत करें, वह लोग इस के अतिरिक्त दूसरे स्थान पर इ़बादत नहीं कर सकते थे।

हज़रत नूह अलैहिस सलाम के ज़माने में जब तूफान आया तो सर्व धरती पानी से भर गई तथा सम्पूर्ण धरती (पृथ्वी) को स्नान दिया गया। फिर भी धरती पवित्र व शुद्ध नहीं हुई के कहीं भी सजदा किया जा सके।

किन्तु सरकार का पावन क़दम पढ़ना क्या था के सर्व धरती पवित्र व शुद्ध ही नहीं बल्कि आप के आगमन की बरकत से शुद्ध व पवित्र करने वाली बन गई।

इसी प्रकार पूर्व समुदाय के लिए तैयमुम नहीं था। किन्तु सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के क़दमों की बरकत से धरती ऐसी पवित्र हो गई के आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) के उम्मती व संप्रदाय के लिए यदि किसी समय पानी उपलब्ध ना हो तो वह मिट्टी से तैयमुम कर के पवित्रता व शुद्धता प्राप्त कर सकता है।

सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम निर्मल व विशुद्ध पैदा हुए

सम्पूर्ण कायनात को कुफ्र व शिर्क की अपवित्रता, उपेक्षा व अधार्मिक की नहूसत से पवित्र व शुद्ध कर के इ़मान व इसलाम के कांति से रोशन करने के लिए नबी पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम आए। आप की धन्य स्थिति के बारे में खुद आप के प्रिय माता फरमाती हैः

जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) आए तो इस स्थिति में आए के आप के पवित्र शरीर पर कोई अनुचित चीज़ ना थी।

(अल मवाहिब लदुन्निया, जिल्द 01, पः 220)

शुद्ध शरीर से सुगन्ध महेक रही थी तथा आप सुरमा (काजल) लगाए हुए नाभ्य तन्तु कटे हुए पैदा हुए।

(अस सीरतुल हलबिय्या, जिल्द 01, पः 53)

हज़रत सैयदना हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ये दोहा भी इस विषय का आईनेदार हैः-

भाषांतरः- या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! आप जैसा सुन्दर मेरी आँख ने कभी देखा तथा आप जैसा सुन्दर व हसीन किसी महिला को जन्म ही नहीं हुआ।

आप हर खोट व कमी से पवित्र पैदा किए गए आप क इसी प्रतिभा के साथ पैदा किया गया जैसा आप चाहते थे।

(दीवाने-हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, जिल्द 01, पः 02)

जन्म के समय निवेदित लक्षण के प्रकटन – कअ़बा 3 दिन तक झूमता रहा

जिस सुहानी घडी सरवर कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म हुआ तो आप के पदार्पण की खुशी व प्रसन्नता का प्रदर्शन कअ़बा भी कर रहा थाः

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अ़म्र बिन खुतैबह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं के मैं ने अपने पिता को फरमाते हुए सुना- और वह ज्ञान के एक विशाल प्रकटन थे। जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य जन्म का समय आया तो अल्लाह तआ़ला ने अपने पटियों को

आदेश दिया के सम्पूर्ण आकाशों तथा पूर्ण जन्नतों के दरवाज़े खोल दें तथा धरती पर उपस्तित हो जाएं, तो सम्पूर्ण फरिश्ते पृथ्वी पर उपस्थित हो गए, तथा आपस में एक दूसरे को प्रतिनन्दन व बधाई देने लगे, एवं संसार के पर्वत ऊंचो हो गए तथा महासागर की मौजें बुलंद हो गई, और महासागर के प्राणी आपस में एक दूसरे को बधाई देने लगे। सम्पूर्ण फरिश्ते उपस्थित हो चुके थे, तथा शैतान को 70 बेड़ियों में जकड़ दिया गया, तथा इसे महासागर की लेह में मुंह के बल ड़ाल दिया गया, शैतानों तथा सरकश जिन्नों को क़ैद व बंद की ज़ंजीरों में जकड़ दिया गया, तथा इस दिन सूर्य को विशाल नूर से आभूषण किया गया, तथा इस के ऊपर फिज़ा में 70,000 हूरों को ठहराया गया के वह सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म की अनमोल घड़ियों की प्रतीक्षा करती रहें, और अल्लाह तआ़ला सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के प्रतिभा व गौरव में इस वर्ष संसार के सम्पूर्ण महिलाओं के बारे में निर्णय कर दिया के इन्हें लड़का जन्म होगा, तथा सम्पूर्ण वृक्षों को यूवक कर दिया गया, और प्रत्येक भय को शान्ति में बदल दिया या, जब हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ तो सर्व संसार नूर से संभवन हो गया। और मलाइ़का आपस में एक दूसरे को शुभ-समाचार देने लगे, तथा प्रत्येक आकाश में अनमोल मणि तथा याखूत का एक-एक स्तम्भ गाड़ा गया, जिस के कारण से आकाश दीप्तिमान हो गया, वह स्तम्भ सर्वोच्च परलोक (माला-ए-आला) में प्रचलित हैं, जिसे सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने मेअ़राज की रात दर्शन किया तो निवेदन किया गया के यही वह स्तम्भ हैं जो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की खुशी में गाड़े गए, तथा जिस रात आप का जन्म हुआ अल्लाह तआ़ला ने हौज़े-कौसर के किनारे पर 70,000 सुगन्धित मश्क (कस्तूरी) के वृक्ष लगाए, तथा इन का फल जन्नत वासियों के लिए सौधाहट बना दिया गया, और सम्पूर्ण आकाशों के निर्माण अल्लाह तआ़ला से सलामती व कुशलक्षेम की प्रार्थना करने लगे, तथा सम्पूर्ण बुत सर के बल हो गए, तथा लात तथा उ़ज़्ज़ा

अपने स्थान से बाहर निकल पड़े, और वह कह रहे थेः "खुरैश का भला हो! इन के पास विश्वसनीय व कर्तव्यनिष्ठ नबी आ चुके हैं, इन के पास सत्य वाला आ चुक है, खुरैश को नहीं मालूम के इसे क्या उत्तमता प्राप्त हुई," और लोगों ने कअ़बा शरीफ से कई दिन तक आवाज़ सुनी, वह कह रहा थाः अब मेरा नूर मुझे लौटा दिया जाएगा, अब मेरा तवाफ (प्रदक्षिणा व परिक्रमा करना) करने वाले मेरे पास आएंगे। अब मैं अज्ञानता की दुर्वचन व अपशब्द से पवित्र कर दिया जाऊँगा। अए ज़ज़ा! तो विनाशक हो गया, तथा कअ़बा लगातार 3 दिन तथा 3 रात तक झूमता रहा, तथा ये प्रथम निसानी थी जिसे खुरैश ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के जन्म के अवसर पर देखी थी।

(खसाइसे-कुबरा, जिल्द 01, पः 80)

हज़रत अबदुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः मैं ने कअ़बा की दीवारों से ये आवाज़ सुनी सरकार कायनात सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम का जन्म हो चुका है, जिन के पवित्र अस्तित्व से कुफ्र का अँधेरा समाप्त हो गई, तो बुतों (मूर्तियों) की अशुद्धता को संसार को पवित्र करेंगे तथा अल्लाह तअ़ाला की ओर लोगों को बुलाएंगे।

(अस सीरातुल हलब्बिया, जिल्द 01, पः 86)

सैयदह आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन

मुसनद इमाम अहमद में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना इ़रबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की प्रिय माँ ने दर्शन किया के सरकार पाक सल्लल्लाहु

तआ़ला अलैहि वसल्लम के जन्म के समय ऐसा नूर प्रकट हुआ के सीरिया देश को महल दिखने लगे।

(मुसनद इमाम अहमद, हदीस संख्याः 17615)

ये सब प्रबन्ध किस लिए हो रहा है क्यों के ये इस शाह का आगमन है के जिस के पदार्पण का हो कोई प्रतीक्षा कर रहा था, जिन के आने की शुभ-सूचना पैगम्बर देते रहे, ये वही हैं जिन की संप्रदाय में होने की हज़रत मूसा अलैहिस सलाम को इच्चा थी।

पावन जन्म की प्रसन्नता में 3 झण्डे गाड़े गए

हदीस के विशेषज्ञ इमाम जलालउद्दीन अबदुर्रहमान बिन अबु बक्र सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह ने खसाइस कुबरा में, और इमाम अहमद बिन मुहम्मद खुसतुल्लानी रहमतुल्लाहि अलैह ने मवाहिब लदुन्निया में व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदा आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं के मैं ने देखा के पावन जन्म के समय 3 झण्डे लगाए गएः (1) एक पूरब में (2) दूसरा पश्चिम में (3) और तीसरा कअ़बा पर।

(अल खसाइस अल कुबरा, जिल्द 01, पः 82 / अल मवाहिब अल लदुन्निया, जिल्द 01, पः 125)

कअ़बे पर झण्डा इस लिए लगाया गया ताकि संसार वालों को पता चल जाए के अब तक कअ़बतुल्लाह के अतराप 360 बुत रखे हुए थे। वहाँ झूठे को पूझा करते थे किन्तु अब वह नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम आ चुके हैं जो कअ़बतुल्लाह को सम्पूर्ण अशुद्धता से पवित्र करेंगे, इसे सर्व संसार के लिए क़िबला बनाएगे।

और पूरब व पश्चिम में झण्डा लगा कर के ये घोषणा की जा रही है के यो जन्म उनकी है जिसका राज्य पूरब व पश्चिम रहेगी, तथा आप सारी निर्माण के लिए रिसालत की प्रतिभा के साथ आ रहे हैं। इस का प्रोत्साहन सहीह हदीसों से होती है, अर्थात सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना ज़ुखबा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः निश्चय मुझे धरती के सम्पूर्ण खज़ानों की कुंजियां प्रदान की गईं।

(सहीह बुखारी, किताबुल मनाखिब, हदीस संख्याः 3596)

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मैं सम्पूर्ण निर्माण की ओर रिसालत (पैगम्बर) की प्रतिभा के साथ भेजा गया हुँ, तथा मुझ पर नबूवत के सिलसिले को समाप्त कर दिया गया।

(सहीह मुसलिम, किताबुल मसाजिद, हदीस संख्याः 1195)

हज़रत सैयदह आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैः

भाषांतरः- जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का जन्म हुआ, तो ये सूचना दी गईः "आप को धरती के पूरबों व पश्चिमों की सैर कराउँ।" और एक कहने वाले ने कहाः खुश हो जाओ! मुहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सर्व संसार पर कब्जा कर लिया है। ब्रह्माण के सम्पूर्ण प्राणी आप के कब्जे में प्रवेश हो गए।

(खसाइस कुबरा, जिल्द 01, पः 82)

इमाम खुसतुल्लानी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी पुस्तक "अल मवाहिब लदुन्निया" में इमाम अबु सईद अबदुल मुल्क निशापूरी की पुस्तक "मुअजम कबीर" और इमाम अबु नुअम के हवाले से रिवायत व्याख्या की है। हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदह आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है के जब गर्भ के 6 महीने गुज़र गए तो मुझ से सपने में किसी ने कहा के अए आमिना! तुम्हारे गर्भ (पेट में) में वह जात है जो सम्पूण ब्रह्माण से सर्वश्रेष्ठ व उत्त है। जब इन का पावन जन्म हो जाए तो इन का धन्य नाम "मुहम्मद" सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रखना, तथा इस समय तक अपनी स्थिति को छिपाए रखना। आप फरमाती हैं के दरवाज़े तक मेरी स्थिति को कोई नहीं जानता था, उस समय मैं घरम में तन्हा थी क्यों के हज़रत अबदुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कअबे के तवाफ में व्यस्त थे, मैं ने एक कठिन आवाज़ सुनी, जिस के कारण से मैं घबराई, अचानक मैं ने देखा के एक सफेद पक्षी का बाज़ू मेरे दिल पर मसाह कर रहा है। इस के साथ ही मेरे दिल पर जो ख़ौफ़ व भय तारी था तथा दरवाज़े की जो तकलीफ थी वह सब जाती रही, तथा मैं ने देखा के एक चमकदार प्याला रखा हुआ है, मैं ने उसे पी लिया जिस के कारण से दूर-दूर तक प्रफुल्ल हो गया, फिर मैं ने देखा के लम्बे कद वाली महिलाएं आई हुई हैं जो अब्द मुनाफ की महिलाएं लग रही थीं। मैं ने आश्चर्य की परिस्थिति में कहा के तुम्हें मेरी स्थिति की किस प्रकार सूचना हुई? उन्हों ने कहा के हम आसिया तथा मरयम बिन्त इमरान हैं तथा हमारे साथ ये जन्नत की हूरें हैं। आप फरमाती हैं के हर घड़ी एक ज़ोरदार आवाज़ सुना करती, एक के बाद मैं ने देखा के आकाश तथा धरती के बीच एक विशाल रेशम लम्बा किया गया है, तथा प्रतिवेदन करने वाला सूचना दे रहा है के इस पुण्य जात को लोगों की निगाहों से छिपाए रखो! और मैं ने कई सदस्य को देखा के वह हवाओं में खड़े हैं, इन के हाथों में चाँदी के आफताबे थे, उस के बाद कई

पक्षी आ गए, जिन से मेरा घर भर गया, इन पक्षियों की चूंचें ज़मरुद की थी तथा इन के बाज़ याखूत के थे, इस समय अल्लाह तआ़ला ने मेरी दृष्टि खोल दिया जिस से मैं ने पूरबों व पश्चिमों देख लिए, तथा मैं ने देखा के 3 झण्डे लगाए गए हैं। इन में से एक पूरब में लगाया गया था, एक पश्चिम में तथा एक कअ़बा के ऊपर लगाया गया था। फिर जन्म अवस्था आई तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म हुआ। जब मैं ने आप को देखा तो आप सजदेह में थे तथा दोनों हाथ की शहादत की अंगुलियां (तर्जनी) आकाश की ओर हैं अतेत ऐसा मालूम होता के कोई *तज़रअ़ व ज़ारी* कर रहा है। फिर मैं ने देखा के एक सफेद अभ्र उतर कर आप को ढ़ांप लिया, तथा आप मेरी निगाहों से ओझल हो गए तथा मैं ने एक सूचना देने वाले की आवाज़ सुनी जो ये केह रहा है के आप को धरती के पूरब व पश्चिम की सैर कराउँ तथा महासागरों में ले जाउँ ताकि सर्व निर्माण आप को आप के मुबारक नाम, गुण, तथा लक्षण को पेहचान लें। पिर थोड़ी देर के बाद वह अभ्र खुल गया एवं आप मेरे सामने आ गए, उस समय आप के धन्य हाथ में एक हरा रेशम लपटा हुआ था जिस में से पानी जारी था।

(अल मवाहिब लदुन्निया, शरह अल ज़ुरखानी, जिल्द 01, पः 209-215)

इमाम बैहखी तथा इमाम अबु नुअ़म ने रिवायत की हैः-

भाषांतरः- हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के मैं 7 या 8 वर्ष की उ़म्र का एक बुद्धिमान बालक था, मैं ने देखा के यसरिब का एक यहूदी सवेरे के समय अपने क़िले की छत पर खडा पुकारने लगाः अए यहूद संघ! आस-पास के सारे यहूदी जमा हो गए, लोगों ने इस से कहाः तेरी ख़राबीहो, क्यों शोर मचाता है? वह कहने लगाः अहमद मुक़तार का सितारा उदय हो गया है, जिन का आज रात पावन जन्म होने वाला था।

(खसाइस कुबरा, जिल्द 1, पः 77)

मीलाद कि रात - तारे करीब आ गए

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म कि रात बहुत सारे अनोखा दृश्य हुए। कई एक असामान्य घटना घटित हुए। जिन का वर्णन हदीस की पुस्तकों, सीरत की पुस्तकों तथा इतिहास की पुस्तकों में विस्तार रूप से मिलते हैं। पूर्ण इन अनोखे ये है के तारे (नक्षत्र) के ग़ायत दर्जे निकट हो चुके थे।

जैसा के अ़ल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ सालेही ने सुबुलुल हुदा वर्रशाद में हज़रत उसमान बिन अब अलआ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की माँ हज़रत फातिमा बिन्त अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का वर्णन व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः- हज़रत उसमान बिन अब अलआ़स रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः मुझे मेरी माँ ने वर्णन किया के वह सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म के अवसर पर हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की सेवा में उपस्थित थी। फरमाती हैः मैं ने घर की प्रत्येक वस्तु को रोशन व दीप्तिमान देखा एवं ये सच्चाई है के तारों को निकट होते देखी, यहाँ तक के मैं कहने लगीः ये निश्चय मुझ पर गिर जाएंगें, जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से तशरीफ लाए तो आमिना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से ऐसा नूर निकला के जिस के कारण से सारा घर रोशन व दीप्तिमान हो गया, यहाँ तक के मैं नूर ही नूर देखने लगी।

(सुबुलुल हुदा वर्रशाद, जिल्द 01, पः 341)

अ़ल्लामा इब्न कसीर ने सीरत नबविय में, इमाम सुयूती ने खसाइ़स कुबरा में, इमाम बैहखी ने दलाइ़ल नबूवह में वर्णन किया है।

जन्म का प्रकटन – सरकार पाक के धन्य जबान से

इमाम अहमद बिन हंबल, इमाम बज़्ज़ार, इमाम तबरानी, इमाम हाकिम, इमाम बैहखी तथा इमाम अबु नुअ़म रहीमुल्लाह ने रिवायत वर्णन की हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत सैयदना इ़रबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के ह़ज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मैं इस समय भी अल्लाह का बन्दा तथा अंतिम पैग़म्बर था जबके ह़ज़रत आदम अलैहिस सलाम तीव वेदना में ही थे, तथा मैं तुम लोगों पर स्पष्ट करता हुं के मैं सैयदना इब्राहीम अलैहिस सलाम की प्रार्थना तथा ह़ज़रत ईसा अलैहिस सलाम की बशारत तथा अपनी प्रिय माँ का वह दृश्य हुं जो इन्हों ने दर्शन किया था और इसी प्रकार पैगम्बरों के पावन माताओं दृश्य देखा करती थी, तथा निस्संदेह आप की प्रिय माँ ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म के समय ऐसा नूर देखा जिस के कारण से इन के सामने सीरिया देश के महल प्रफुल्ल व रोशन हो गए।

(खसाइस कुबरा, जिल्द 01, पः 78)

एक रिवायत के अनुसार सीरिया देशा में क़यामत के दिन लोग जमा होंगे तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म के अवसर पर विशेष रूप से सीरिया के महल नज़र आने में इस बात की ओर संकेत है के आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) का आशिर्वाद इस जगत में भी है तथा उस जगत में भी, इन की करम संसार में भी हैं तथा क़यामत के दिन में भी।

सरकार के जन्म पर खुशियां मनाना स्वभाविक

मानव की तबीयत व स्वभाव में ये बात प्रवेश है के जब उसे कोई तकलीफ या दुख होता है या किसी की तकलीफ को सुनता है तो इस के चेहरे पर स्वतः दुःख के लक्षण प्रदर्शन हो जाते हैं।

इसी प्रकार जब कोई सुन्दर दृश्य देखता है या कोई वरदान इसे प्राप्त होती है तो स्वभावतः इस के चेहरे पर खुशी व प्रसन्नता के प्रभाव प्रकट हो जाते हैं। प्रत्येक के सामने इस का चरचा करने लगता है, इस पर ना किसी का दबाव होता है ना इसे कोई बुरा समझता है।

ध्यान करना चाहिए के संसार की छोटे से वरदान के प्राप्त होने पर इतना प्रसन्नता का प्रदर्शन जब के संसार भी समाप्त होने इस के वरदान भी समाप्त, इस के लिए इतनी प्रसन्नता व खुशी है तो फिर सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का पावन जन्म तो विशाल वरदान व नेअ़मत तथा प्रधान नेअ़मत है के सम्पूर्ण वरदान चाहे सांसारिक हों या परलोक की उन्हीं के सदखे में मिलती है। इस वरदान के संबोधन व आभूषण पर हमें कितनी प्रसन्नता व खुशी का प्रदर्शन करना चाहिए।

हज़रत शैखुल इसलाम प्रवर्तक जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः अब ध्यान करिए के जब ये सर्वसम्मति है किसी विशाल वरदान के प्राप्त होने के दिन इस योग्य है के हमेशा इस में प्रसन्नता व खुशी तथा ईद की जाए तो बताएं के मुसलमानों के नज़दीक हज़रत सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की धन्य आगमन से बढ़ कर कौनसा वरदान हो सकता है।

फिर यदि इस दिन खुशी व प्रसन्नता ना की जाए तो कौन सा दिन आएगा जिस में ईमानी तरीक़े से खुशी की जाएगी?

(मखासिदुल इसलाम, भाग-01, पः 63)

स्वभाविक अपेक्षा भी है तथा प्रकृति की नीति भी, तथा अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- आप फरमा दीजिए के अल्लाह तआ़ला की रहमत (अनुग्रह) तथा इस के फ़ज़्ल (दया) पर ही खुशी मनाएं।

(सुरह यूनुसः 10:58)

जो व्यक्ति सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म के अवसर पर प्रसन्नता व आनन्द का प्रदर्शन करता है अल्लाह तआ़ला इसे विशाल पुण्य व सवाब प्रदान करता है।

सहीह बुखारी तथा अन्य कई ह़दीस की पुस्तकों में शब्द के अंतर के साथ रिवायत वर्णन है, कुछ रिवायतों में परिमित के साथ तथा कुछ में विस्तार है, सहीह बुखारी, जिल्द 02, पः 764 की रिवायत के शब्द ये हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत उ़रवह रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं *सुवैबा* अबु लहब की दासी है, अबु लहब ने इन्हें आज़ाद किया था तथा वह ह़ज़रत नबी पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को दूध पिलाएं, जब अबु लहब मर गया तो इस के परिवार वालों में किसी ने सपने में उसे बदतरीन व दुष्टतर स्थिति में देखा, उस से कहाः तू ने क्या पाया? अबु लहब ने कहाः मैं ने तुम लोगों से जुदा होने के बाद कुछ विश्राम नहीं पाया, सिवाए ये के *सुवैबा* को आज़ाद करने के कारण से इस (अंगुलि) से पुनश्चर्या व सैराब किया जाता हुँ।

(सहीह बुखारी, किताब उन निकाह, जिल्द 02, पः 764, ह़दीस संख्याः 5101)

इस रिवायत की व्याख्या व वृत्ति करते हुए हज़रत अ़ल्लामा बद्रउद्दीन ऐनी हनफी तथा हाफिज़ इब्न हज्र अ़सखलानी शाफई़ रहीमुल्लाह तअ़ाला ने अपनी अपनी पुस्तकों में अन्य हदीस के पुस्तकों के हवाले से विस्तार वर्णित लिखते हैं। यहाँ अ़ल्लामा बद्रउद्दीन ऐनी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह की शरह उ़मदतुल खारी, जिल्द 14, पः 45 से व्याख्या की जा रही हैः-

भाषांतरः- हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं के जब अबु लहब मर या तो मैं ने एक वर्ष के बाद सपने में उसे दुष्टतर स्थिति में देखा तो उस ने कहाः मैं तुम से जुदा होने के बाद अब तक राहत नहीं पाया, किन्तु प्रत्येक सोमवार (पीर) के दिन मुझ से अज़ाब व याचना हल्का किया जाता है। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं- वे इस लिए के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम सोमवार के दिन जन्म हुए तथा *सुवैबा* ने अबु लहब को आप के पावन जन्म की शुभ-सूचना दी तो उस ने इन्हें आज़ाद कर दिया था।

(उ़मदतुल खारी, जिल्द 14, पः 45)

उपर्युक्त वर्णन रिवायत अनेक शब्द के साथ इन हदीस के पुस्तकों में भी हैः-

सुनन कुबरा, किताब उन निकाह, हदीस संख्याः 14297

मुसन्नफ अबदुर रज़्ज़ाख, किताबुल मनासिक, जिल्द 07, हदीस संख्याः 13546

जामेअ़ उल अहादीस, हदीस संख्याः 43545

कंज़ुल उ़म्माल, हदीस संख्याः 15725

इस रिवायत के प्रति हज़रत शैखुल इसलाम प्रवर्तक जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह कहते हैः इस रिवायत से ये मालूम हुआ के प्रत्येक

जन्म के दिन एक निश्चय सोमवार के दिन हुआ परन्तु इस का प्रभाव हर सोमवार में जारी है। इस अनुसार से यदि हर सोमवार आनन्द के प्रदर्शन के लिए विशेष किया जाए तो बेअवसर ना होगा।

कम से कम वर्ष में ए बार तो प्रसन्नता का प्रदर्शन होना चाहिए। इसी कारण से हरैम शरीफ में *रोज़ दोअ़ज़दम* अत्यन्त प्रबन्ध से होता है यहाँ तक के इस दिन और ईदों के प्रकार खुत्बा पढ़ा जाता है तथा सम्पूर्ण मुसलमान खुशियां मनाते हैं, विशेषकरः मदीने में तो दूर-दू से क़ाफिले पर क़ाफिले चले आते हैं तथा ईद के रस्म संपादन किए जाते हैं।

(मखासिदुल इसलाम, भागः01, पः 42)

वर्णन हदीस से संप्रदाय के विद्वान के दलील

संप्रदाय के विद्वानों में हाफिज़ शम्सउद्दीन इब्न अल जुज़री ने तथा हाफिज़ शम्सउद्दीन बिन नासिरउद्दीन दमिश्की रहीमुल्लाह तअ़ाला ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म के अवसर पर प्रसन्नता मनाते तथा आनन्द व खुशियों का प्रदर्शन करने पर इस रिवायत से दलील किया हैः-

हाफिज़ शम्सउद्दीन बिन नासिरउद्दीन दमिश्की फरमाते हैं-

भाषांतरः- ये सहीह रिवायत है के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म पर प्रसन्न व खुश हो कर सुवैबा को आज़ाद करने के कारण से अबु लहब से सोमवार के दिवस दोज़ख के याचना व अज़ाब में अवसान व विराम किया जाता है फिर उन्हों ने कथन पढ़े इस का भाषांतर ये हैः जब ये (अबु लहब) काफिर है जिस के आलोचना में सुरह तब्बत यदा प्रकट हुआ तथा वह हमेशा दोज़ख में रहने वाला है तो अहमद मुजतबा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की मीलाद पर खुश होने के

कारण से हमेशा प्रत्येक पीर व सोमवार के दिन इस से याचना व अज़ाब में अवसान किया जाता है तो इस बन्दे के अधिकार में किसी प्रकार सवाब व पुण्य का विचार किया जाए जो जीवन भर अहमद मुजतबा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के मीलाद की खुशी व प्रसन्नता मनाया तथा इ़मान की स्थिति में देहान्त किया।

इस का वर्णन शरह अल मवाहिब लदुन्निया लिज़ ज़ुरखानी, जिल्द 01, पः 261, तथा सुबुलुल हुदा विर्रशाद, जिल्द 01, पः 367 में उपलब्ध हैः-

इ़ब्न अबदुल वहाब नजदी के बेटे तथा इब्न ज़ूज़ी का स्पष्टीकरण

इब्न अबदुल वहाब नजदी के बेटे शैख अबदुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबदुल वहाब ने अपनी पुस्तक *मुक़तसर सीरह रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम* में लिखा हैः-

भाषांतरः- अबु लहब की आज़ाद की दासी *सुवैबा* को सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की सेवा की कृपा मिली, अबु लहब ने इन्हें इस समय आज़ाद किया था जिस समय इन्हों ने इसे सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म की शुभ-सूचना सुनाई थी।

(मुक़तसर सीरह अर रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम, जिल्द 01, पः 10, प्रकाशक- दारुल फैहा दमिश्क)

और अबु लहब के मृत्यु के बाद उसे सपने में देखा गया। इस से पूछा गया के तेरी क्या स्थिति है? तो उस ने कहाः मैं अज़ाब व याचना में हुं किन्तु प्रत्येक सोमवार के दिन मुझ से अज़ाब व याचना हल्का किया जाता है। तथा मैं अपनी इन दोनों अंगुलियों के बीच पानी चूसता हुं (इस ने अपनी अंगुलि की पूर की ओर संकेत व इशारा किया) तथा ये सुवैबा को इस अवसर पर आज़ाद करने की बरकत है जिस समय इस ने मुजे नबी अकरम

सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म दी थी, तथा सेवा की कृपा प्राप्त की थी।

शैख अबदुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबदुल वहाब ने इस रिवायत से मीलद पर दलील करते हुए अ़ल्लामा इब्न जूज़ी की व्याख्या अनुवाद किया हैः-

भाषांतरः- इब्न जूज़ी ने कहाः जब काफिर अबु लहब के जिस की आलोचना में क़ुरान की सूरत प्रकट हुई इसे नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन जन्म की रात खुश व प्रसन्न होने पर सवाब व पुण्य दिया जा रहा है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की संप्रदाय का मोमिन जब आप के पावन जन्म पर खुशी व आनन्द का प्रदर्शन करता है तो वह किस प्रकार नूरानी जाएगा।

(मुक़तसर सीरह अर रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम, जिल्द 01, पः 16-17 – प्रकाशक- दारुल इसलाम रियाज़

अल्लाह तआ़ला हमें मीलाद के ज़िक्र की कृपा व बरकतों से धनी करे, सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से असीमित प्रेम व मुहब्बत करे का मार्गदर्शन करे तथा आप की पावन सीरत (जीवन) पर कृत्य करने की भावना प्रदान करे।

आमीन